शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिवेश में

विनीत कुमार आर्य,**डॉ0 राम बाबू सिंह,डॉ0 मीनाक्षी द्विवेदी**

*शोध छात्र, बी.एड./एम.एड. विभाग, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, एम.जे.पी.आर.यू.,बरेली

**असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड./एम.एड. विभाग, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, एम.जे.पी.आर.यू.,बरेली

***असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड./एम.एड. विभाग, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, एम.जे.पी.आर.यू.,बरेली

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रणाली द्वारा 6 स्नातक (बी.एड.) स्तर के महाविद्यालयों से 120 शिक्षक–प्रशिक्षकों का चयन किया गया। वर्णात्मक (सर्वेक्षण विधि) का प्रयोग किया गया, प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग कर आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणाम के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति ग्रामीण एवं शहरी, पुरूष एवं महिला तथा सरकार एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

संकेत शब्द :– *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक प्रशिक्षक, अभिमत।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा किसी भी देश का आधार होती है, जो व्यक्ति समाज, देश, विदेश, वातावरण आदि के साथ व्यक्ति का सामाजस्य स्थापित करती है। शिक्षा स्वयं में मानव विकास व सामाजिक कल्याण जैसी प्रक्रिया है जो समाज में नवाचार के साथ–साथ सकारात्मक परिवर्तन भी लाती है। यह वह सशक्त हथियार है जिसके द्वारा हम समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्डों, अंधविश्वासों और पूर्वधारणाओं को दूर कर सकते है और एक आदर्श, शिक्षित, सभ्य व सुसंस्कृतिक समाज की आधारशिला रख सकते है **(हुसैन, 2022)**। हमारे राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों को कार्य रूप में परिणित करने तथा संविधान में वर्णित स्वतंत्रता, समानता, न्याय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने की भविष्यन्मुखी योजना की मूलभूत संरचना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के रूप में व्यक्ति को तैयार करती है **(यादव एवं सिंह, 2021)**।

मेरा देश विकास की ओर बढ़ता जा रहा है,
मेरा देश प्रतिदिन नया कुछ रचता जा रहा है।
मेरा देश गौरवमय इतिहास को फिर दोहरा रहा है,
मेरा भारत फिर विश्वगुरू बनने जा रहा है।

भारत को विश्वगुरू बनाने में मुख्य भूमिका शिक्षक ही निभाता है क्योंकि शिक्षक ही बालकों में वसुधेवकुटुम्बकम की भावना तथा अन्य गुणों को विकसित कर सकता है।

अंय निजः परोवेती, गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु, वसुधेवकुटुम्बकम

इस हेतु शिक्षा के स्तम्भों यथा शिक्षक, विद्यार्थी, पाठ्यक्रम के साथ–साथ शिक्षण विधियां एवं संरचनाओं में जीवन्ततः लाने हेतु समय– समय पर शिक्षाविदों द्वारा शिक्षानीतियों का निर्माण किया जाता रहा है, देश के उन्नित उचित दिशा और तेजी से हो सके इस लिए 34 वर्षों बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाया गया है। जिससे प्रत्येक विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रभावी अनुपालन के लिए शिक्षक प्रशिक्षण में कौशल विकास, विशेषज्ञतापूर्ण व्यवसायिक कार्यक्रमों द्वारा शिक्षकों की भूमिका को सुदृढ़ करेगी **(गुरूपंच,**

2022)। लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है, जब शिक्षा प्रदान करने वाला स्वयं शिक्षित, प्रशिक्षित एवं सुयोग्य हो और यह प्रशिक्षण के पश्चात् ही सम्भव हो सकता है। अतः शिक्षकों को प्रशिक्षित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि प्रशिक्षण, शिक्षण और अधिगम के बीच की कड़ी है जिससे कला कौशल को क्रियात्मक रूप दिया जाता है साथ ही साथ देश को विकास पथ पर अग्रसर किया जा सकता है।

उपरोक्त शिक्षा नीति के विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि पूर्व में दी गयी शिक्ष नीतियों में वांछित परिणामों हेतु प्रस्ताव तो सुझाये गये लेकिन उनका कार्यान्वयन प्रभावी सिद्ध नहीं हुआ। जिसने एक नयी शिक्षा नीति जेकि शिक्षा में पुर्नसंरचना पर आधारित हो, की आवश्यकता महसूस हुयी–

- बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता थी।
- शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति की आवश्यकता थी।
- भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षक शिक्षा :–

- शिक्षक प्रशिक्षण हेतु वर्ष 2020 तक न्यूनतम डिग्री चार वर्षीय एकीकृत बी.एड अनिवार्य करने की संस्तुति दी गयी है।
- पात्रता परीक्षा को विद्यालय शैक्षणिक संरचना के समान प्रत्येक स्तर पर बांटा गया है साथ ही पात्रता परीक्षा पास करने के बाद इन्टरव्यू के साथ कक्षा कौशल प्रर्दशन शिक्षक भर्ती प्रक्रिया का अभिन्न भाग होगा **(यादव एवं सिंह, 2021)**।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण के साथ ही नवाचारों हेतु निरन्तर व्यवसायकि विकास को अंगीकृत किया गया है।
- शिक्षक समुदाये हेतु स्कूल, कॉमप्लेक्स के निर्माण का प्रावधान किया गया है।
- वर्टीकल मोबिलिटी की अनुशंसा की जिसके अंतर्गत नेतृत्व और प्रबन्धन कौशल में उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जायेगा।

उपरोक्त ड्राफ्ट में वर्णित शिक्षक शिक्षा से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं के संदर्भ में शिक्षाविदों के विभिन्न मत हैं, कुद शिक्षाविदों का मानना है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा शिक्षक शिक्षा में वर्ष 2030 तक यह बिन्दु क्रान्तीकारी परिवर्तन लाने में मील का पत्थर सिद्ध होंगे वहीं कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि उपरोक्त बिन्दु केवल पूर्व नीतियों की पुनरावृत्ति मात्र है। उनके अभीमत के अनुसार शिक्षक शिक्षा में समस्या संरचना से अधिक कार्यान्वयन की है। अतः उपरोक्त मतों के स्पष्टीकरण हेतु शोधकत्री द्वारा प्रस्तुत अध्ययन का चयन किया गया है।

आवश्यकता एवं महत्व :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति जहाँ छात्रों की प्रतिभा को अधिक निखार कर बेहतर बनाने के उपाय लेकर आई है वही इसमें शिक्षकों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है ताकि आदर्श शिक्षकों के द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्य परिलक्षित होंगे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में सचिव रह चुके और एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक और जाने–माने शिक्षाविद जे. एस. राजपूत शिक्षकों की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि किसी भी देश की शिक्षा नीति की सफलता अध्यापकों की योग्यता, कर्मठता और प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करने की बात कही गई है। राष्ट्रीय शिक्षा

नीति 2020 में शिक्षा के विभिन्न आयामों के साथ–साथ शिक्षक–प्रशिक्षकों के विकास पर भी बल दिया गया है, परन्तु इस हेतु शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों को जानने हेतु प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया गया है।

समस्या कथन :– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2015 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दिशा निर्देशन में पूर्व कैबिनेट सचिव स्वर्गीय टी.आर. एस सुब्रमणियम की अध्यक्षता में 2016 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। इसके पश्चात भारत सरकार द्वारा सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक पद्मविभूषण, पूर्व इसरो प्रमुख डा. कृष्णस्वामी कस्तूरी रंगन की अध्यता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को तैयार करने हेतु समिति गठिन कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रारूप 2019 प्रस्तुत किया गया है। जिसके आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को 29 जुलाई 2020 को भारत के केन्द्रीय मंडल द्वारा इसे अनुमोदित किया गया।

शिक्षक–प्रशिक्षक – शिक्षक प्रशिक्षक से तात्पर्य उस महिला पुरूष से है जो महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

अभिमत – अभिमत से तात्पर्य अपने स्वयं के विचार तथा स्वयं के दृष्टिकोण से है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- क्षेत्रीयता के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षको के अभिमतो का अध्ययन करना।
- स्कूल के प्रशासन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षको के अभिमतो का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभिमतो में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभिमतो में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभीमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के अंतर्गत बरेली जनपद के प्रति शिक्षक प्रशिक्षकों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

न्यादर्श :–

इस अध्ययन में शोधकर्ता ने साधारण यदृाच्छिक प्रतिदर्श प्रणाली द्वारा 6 स्नातक स्तर के महाविद्यालयों का चयन किया है, इन्ही मेंसे 120 शिक्षक–प्रशिक्षकों का चयन किया गया।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक (सर्वेक्षण विधि) का प्रयोग किया गया है।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ :–

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टैस्ट का प्रयोग किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण :–

तालिका संख्या –1

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान का विवरण

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	सी. आर.–मान (CR)	परिणाम
शहरी शिक्षक–प्रशिक्षक	56	126.88	21.76	0.73	सार्थक नहीं
ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षक	64	124.71	18.18		

सार्थकता स्तर 0.05*

तलिका संख्या 1 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 126.88 तथा मानव विचलन 21.76 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 124.71 तथा मानक विचलन 18.18 है। शहरी शिक्षक–प्रशिक्षकों का मध्यमान तथा मानक विचलन ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्यमान तथा मानक विचलन के अधिक है। टी–परीक्षण के प्रयोग से प्राप्त टी मान 0.73 आया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 मान 1.98 से कम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या –2

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान का विवरण

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	सी. आर.–मान (CR)	परिणाम
पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षक	60	130.50	18.45	1.82	सार्थक नहीं
महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	60	122.86	26.73		

सार्थकता स्तर 0.05*

तालिका संख्या 2 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 130.50 तथा मानव विचलन 18.45 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 122.86 तथा मानक विचलन 26.73 है। पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का मध्यमान तथा मानक विचलन महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्यमान तथा मानक विचलन से अधिक है। टी परीक्षण के प्रयोग से प्राप्त टी मान 1.82 आया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 मान 1.98 से कम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या –3

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान का विवरण

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	सी. आर.–मान (CR)	परिणाम
सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक–प्रशिक्षक	60	130.50	26.73	0.67	सार्थक नहीं
गैर–सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक–प्रशिक्षक	60	127.74	17.77		

सार्थकता स्तर 0.05*

तालिका संख्या 3 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के प्रति सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 130.50 तथा मानव विचलन 26.73 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति गैर–सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का मध्यमान 127.74 तथा मानव विचलन 17.77 है। सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों का मध्यमान तथा मानकविचलन गैर–सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के मध्यमान तथा मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण कर प्रयोग करने से टी मान 0.67 आया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.98 से कम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति शहरी तथा ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ व परिकल्पना स्वीकृत की गयी।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ व परिकल्पना स्वीकृत की गयी।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ व परिकल्पना स्वीकृत की गयी।

शैक्षिक निहितार्थ :–

- शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया जाना चाहिए।
- बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुत लाभकारी होगी।
- भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुँच सुनिश्चित करने के लिये शिक्षा के वैश्विक मान को अपनाने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुत लाभकारी सिद्ध होगी।
- विद्यार्थियों में रचनात्मक चिंतन, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया जाना चाहिए।
- शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा शामिल करने के लिए इस नीति को लागू किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक प्रशिक्षक के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों की प्रतिपूर्ती करने में सक्षम होगी।

संदर्भ सूची :–

इग्नू. (2013). *समकालीन भारतीय समाज और शिक्षा (बी एस ई-004).* इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली htpp:/egyankosh.ac.in

गुरूपंच. (2022). नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–चुंनौतियाँ एवं समाधान. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोशल साइंस 10*(4), 199–207.

यादव, आर. एस. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शैक्षिक संरचना और शिक्षक शिक्षा के संन्दर्भ तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षा शोध मन्थन अर्द्धवार्षिक पीयर रिव्यूज्ड जनरल ऑफ एजूकेशन, 7*(2).

लाल, आर. बी. (2013). *भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें.* आर लाल बुक डिपों, मेरठ.

लाल, आर. एम. (n.d.). शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिपेक्ष्य. आर लाल बुक डिपो, मेरठ.

वर्मा, जे. (2020). वैदिक कालीन शिक्षा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक मूल्यांकन, *शिक्षा शोध मन्थन अर्द्धवार्षिक पीयर रिव्यूज्ड जनरल ऑफ एजूकेशन, 6*(2).

मूर्ति, जे. एस. (2022), शिक्षा और स्वास्थ्य में आत्मनिर्भर भारत, ''दृष्टिकोण'', *कला मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका, 2*(6).

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020* https://www.education.gov.in/en

हुसैन, एम. ए. (2022). शिक्षा और स्वास्थ्य में आत्मनिर्भर भारत, ''दृष्टिकोण''. *कला मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका, 4*(4).

How to cite reference of this paper-

आर्य,वी. के., सिंह, आर. बी., एवं द्विवेदी, एम. (2023). शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिवेश में. *Educational Metamorphosis 2*(1), 132-137.